

## १०. गुरुदेव का घर

- निर्मल वर्मा

प्रिय जयशंकर जी,

आपके दो पत्र मिले। मैं शीघ्र उत्तर न दे सका। पिछले दिनों मैं कोलकाता गया था। भारतीय भाषा परिषद के निमंत्रण पर। वहाँ कुछ बहुत पुराने मित्रों से मुलाकात हुई। लोगों के अतिथि सत्कार और स्नेह-सद्भावना से बहुत अधिक अभिभूत हुआ। इस बार काफी लंबी अवधि बाद कोलकाता जाना हुआ... मैं बहुत उत्सुकता से अपने इस प्रिय शहर को पुनः देखने की प्रतीक्षा कर रहा था।

कोलकाता से अधिक स्मरणीय और किंचित उदास स्मृति शांतिनिकेतन की है, जहाँ पहली बार जाने का मौका मिला। रवींद्रनाथ का घर... या बहुत से घर, जहाँ वह समय-समय पर रहते थे, देखते हुए लगता रहा, जैसे उनकी आत्मा अभी तक वहाँ कहीं आस-पास भटक रही हो। मैंने बहुत से दिवंगत लेखकों के गृह स्थान यूरोप में देखे थे, लेकिन शांतिनिकेतन का अनुभव कुछ अनूठा था... जैसे किसी की अनुपस्थिति वहाँ हर पेड़, घड़ी, पत्थर पर बिछी हो। मैंने वे सब पेड़ हाथों से छुए जिन्हें गुरुदेव रवि बाबू ने खुद रोपा था और जिनके नामों का उल्लेख कितनी बार उनके गीतों में सुना था। एक दिन हम शांतिनिकेतन से कुछ दूर उस ग्राम्य प्रदेश को देखने भी गए, जहाँ पावा नदी बहती है... संथालों की रम्य झोंपड़ियाँ, शाल के खेत और पेड़ों से घिरे पोखर-सबको देखकर अनायास शरत बाबू के बहुत पुराने उपन्यासों का परिवेश याद हो आया, जिन्हें कभी बचपन में पढ़ा था। पश्चिमी बंगाल का प्राकृतिक सौंदर्य भारत के अन्य प्रदेशों से बहुत अलग है। कहते हैं, मानसून के दिनों में वह और भी अधिक रमणीय हो जाता है। इच्छा होती है, वहाँ एक-दो महीने एक साथ रहा जाए, तभी मन की भूख मिट सकती है।

वैसे इन दिनों दिल्ली पर भी वसंत की अंतिम गुहार गूँजती सुनाई देती है... दिन भर एक अजीब-सी पगला देने वाली बयार चलती है... दुख यही है कि यह नशीला मौसम ज्यादा दिन नहीं टिकता-गरमी एक बिल्ली की तरह उसे अपने पंजों में दबोचने के लिए छिपी रहती है-कब तक उसकी खूँखार आँखों से अपने को बचा पाएगा।

× × ×

× × ×

आज ही आपका दूसरा कार्ड मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपको 'साहित्य सम्मेलन' में मेरा दिया वक्तव्य ठीक लगा। उसे मैंने धीरे-धीरे बीमारी के दौरान लिखा था, इसलिए उसके बारे में ज्यादा आश्वस्त नहीं था। पिछले तीन-चार वर्षों से हर बार मैं अध्यक्षीय भाषण



**जन्म :** १९२९, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

**मृत्यु :** २००५

**परिचय :** निर्मल वर्मा जी आधुनिक समय के प्रतिष्ठित लेखक एवं अनुवादक थे। पारंपरिक कहानी को आधुनिकता से जोड़ने का श्रेय आपको जाता है। आपकी कथाओं में भारतीय और पाश्चात्य दोनों परिवेश देखने को मिलते हैं। आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'परिदे', 'जलती झड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'कौवे और काला पानी', 'सूखा' (कहानी संग्रह), 'एक दिन, एक चिथड़ा सुख', 'लाल टीन की छत', 'रात का रिपोर्टर', 'अंतिम अरण्य' (उपन्यास) आदि।



प्रस्तुत पत्र प्रसिद्ध लेखक निर्मल वर्मा जी ने अपने प्रिय मित्र जयशंकर जी को लिखा है। प्रथम पत्र में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के मकान, शांतिनिकेतन, पश्चिमी बंगाल के प्राकृतिक सौंदर्य तथा दिल्ली के वसंत की चर्चा की गई है। अगले पत्र में दूसरे पर निर्भर न रहकर, अपने-आप काम करने, अध्ययन एवं लेखन को संबल बनाने की प्रेरणा दी गई है।

देना टालता रहा था। एक बार तो उस संक्षिप्त सम्मेलन व अधिवेशन का गोवा में आयोजन किया गया था, जहाँ मेरे जाने की उत्कट इच्छा थी पर किन्हीं अनिवार्य कारणों से जाना नहीं हो सका। आपको और कुछ अन्य मित्रों को हिंदी भाषा और साहित्य के बारे में मेरे विचार अच्छे लगे, यह जानकर सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई।

आपके पिछले एक पत्र में उदासी और अकेलेपन का दबा-सा स्वर था, जिसने मुझे काफी परेशान किया। मैं सोचता हूँ, आपको अब बहुत कुछ अपने जीवन का, दूसरे पर निर्भर न रहकर, स्वयं अपने काम, अध्ययन और लेखन का संबल बनाना होगा। भोपाल के मित्र अपने कामों में व्यस्त रहते हैं और यद्यपि सब आपसे बहुत स्नेह करते हैं, आपको उनसे नियमित पत्र व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिए। जब कभी मन ऊबे तो छह-आठ महीने में कभी दिल्ली, कभी भोपाल कुछ दिन के लिए चले जाना चाहिए। इससे आपको परिवर्तन का थोड़ा-बहुत आनंद तो मिलेगा ही, यात्रा करने का सुख भी मिलेगा। सौभाग्य से आप अपनी रुचियों में काफी हद तक स्वावलंबी हैं—संगीत, पुस्तकों और कलाओं में आपकी दिलचस्पी बहुत हद तक आपके अनुभवों को एक नये क्षितिज की ओर ले जाती है, जहाँ अपना अकेलापन धुंध की तरह छितर जाता है। यह अपने में बड़ी ब्लेसिंग है, जो हर किसी व्यक्ति के लिए उपलब्ध नहीं है। आपने अपने जीवन को आमला और नागपुर में बाँटकर बहुत अक्लमंदी और दूरदर्शिता का परिचय दिया है—आप जब चाहें अकेले भी रह सकते हैं और जरूरत पड़ने पर परिवार और मित्रों के सान्निध्य का सुख भी उठा सकते हैं। मैं समझता हूँ, यह एक अच्छा उपाय है, जब तक कि उससे कोई बेहतर विकल्प नहीं ढूँढ़ लेते।

मुझे खुशी है कि आप इन दिनों फ्लॉबेर के पत्र पढ़ रहे हैं। रिल्के के पत्रों की तरह वे मुझे बहुत ही प्रेरणादायक लगे थे—कैसे एक व्यक्ति अपने समूचे जीवन को अपने लेखक के प्रति समर्पित कर देता है। वह सचमुच, सही अर्थों में, एक साधक थे। उनका जीवन ही उनका लेखन और लेखन उनका जीवन था।

मैं आजकल अलका सरावगी का नया उपन्यास 'कोई बात नहीं' पढ़ रहा हूँ। मुझे यह बहुत अच्छा लग रहा है। आशा है, कभी आप उसे पढ़ पाएँगे। जब विजय शंकर नागपुर जाएँगे, उनके हाथ में उस उपन्यास को आपको भिजवा दूँगा।

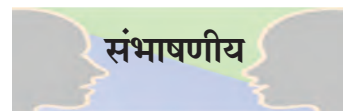
आपकी माँ अब कैसी हैं ? नागपुर में आप कब तक रहेंगे ?

सस्नेह  
आपका निर्मल

— o —



‘मोबाइल के अति उपयोग से होने वाले दुष्परिणाम’ विषय पर अपने विचार लिखिए।



‘नदियाँ दिन-ब-दिन प्रदूषित होती जा रही हैं; इसपर चर्चा करके उन्हें स्वच्छ करने के उपाय बताइए।



शांतिनिकेतन के बारे में जानकारी इकट्ठी करके पढ़िए।



ऑनलाईन ऑडियो पुस्तकें सुनिए तथा चर्चा कीजिए।